संपादकीय

दिनों-दिन एक विचार पुष्ट होते जा रहा है, वह यह है कि ''प्रकृति'' को हमें जितना ज्यादा समझना था, तथा इससे जो निरंतर सीखना था, वह हमने न सीखा न जाना। प्रकृति को समझने बूझने की, धीरे-धीरे विकसित एक व्यवस्थित विधा विज्ञान को हमने पहले प्रकृति का प्रतिद्वंदी फिर नियामक, निर्णायक और अंततः नियंत्रक बनाने की अक्षम्य भूल की है।

हमारी वैदिक संस्कृति तो पूरी तरह से 'प्रकृति सर्वोपरि' की मान्यता पर ही आधारित थी। हमारे प्राचीनतम वेद 'ऋग्वेद' का प्रथम मंत्र ही अग्नि को समर्पित किया गया है, ''ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।'' (ऋग्वेद 1.1.1) वेदों में प्रकृति संरक्षण के सूक्त भरे पड़े हैं। प्रकृति की विभिन्न घटकों, रूपों, छटाओं यथा सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, बादल, बिजली, उषाकाल, संध्याकाल आदि की उपासना, आराधना की कितनी ही ऋचाएं वेदों में देखी जा सकती हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में भी कहा है कि, ''पवन गुरु, पानी पिता, माता धात महत'' अर्थात मनुष्य को हवा को गुरु का दर्जा, पानी को पिता का दर्जा तथा धरती को मां का दर्जा देना चाहिए, इसी भांति समस्त धार्मिक मान्यताओं में प्रकृति को कमोवेश, सर्वोच्च पायदान पर ही रखा है। अपने आपको सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट कृति का दंभ भरने वाला मनुष्य, दरअसल विज्ञान के बहाने स्वयं को प्रकृति तथा पृथ्वी का सर्वोपरि स्वयंभू नियंत्रक मान बैठा। 'नित्शे' का आकलन बिल्कुल सही है कि ''मनुष्य के अगर पेट नहीं होता तो वह बड़े आसानी से अपने आपको ईश्वर ही समझ लेता।''

कठपुतली कला में परंपरा के साथ नयापन लाना होगा

जाने-माने कठपुतली कलाकार **अजीत भट** के साथ **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

प्र. कठपुतली कला विश्व की प्राचीनतम कलाओं में से एक है इस पर कुछ प्रकाश डालें?

उ. जी, यह बात बिल्कुल सही है कि यह विश्व की प्राचीनतम कलाओं में से एक है। विश्व के परिदृश्य में प्रचीन यूनान (ग्रीस) में पांचवीं शताब्दी के आसपास में इसका जिक्र आता है और हमारे यहां महाभारत में कठपुतली का जिक्र आता है। इस पर बात करने से पहले मैं कठपुतली के बारे में कुछ कहना चाहता हूं कि कठपुतली है क्या? यह मनुष्य या जानवर के चेहरे-मोहरे वाली लकड़ी की उसी आकार प्रकार की बेजान पुतली होती है पर उसे कलाकार कई तरीके से जैसे डंडे, धागे आदि से अपने अनुरूप चलाते-फिराते हैं और जीवंत बनाते हैं। अब उसमें भी कई प्रयोग किए जा रहे हैं। कठपुतली कलाकार थे। वे अपने सहयोगी कलाकारों के परिवार के साथ लगभग पचास साल पहले दिल्ली आकर बस गए। बसे भी ऐसे कि हम लोग घुमंतू यानि बंजारा समुदाय के हैं। एक तरह से पुराने समय में हम लोग आज के जीपीएस थे। यहां से वहां के रास्ते हमें पूरी तरह पता होते थे। तो हम कठपुतली खेल दिखाने के लिए जहां- तहां जाते रहते थे। राजस्थान से किसी ओर भी निकलते थे तो दिल्ली का पड़ाव जरूर मिलता था। तो लगा कि दिल्ली ही रहने के लिए ठीक है। हम यहां

अजीत भट
कठपुतली कलाकार
मो. 098710-57011

कुसुमलता सिंह
प्रधान संपादक 'ककसाड़'
मो. 099682-88050